International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 341-343

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 341-343
www.allresearchjournal.com
Received: 28-04-2015
Accepted: 30-05-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

गौरवशाली गणतंत्र भारत के सात दशक

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

आजादी के बाद भारतवर्ष का चतुर्दिक् विकास , स्वयं आप में एक उदाहरण है । वैसे तो विश्व के अनेक राष्ट्रों ने अपने अथक प्रयासों से विकास के अनेक कीर्तिमान् स्थापित किए हैं तथा अनेक देश विकास शील से विकसित देशों की श्रेणी में आ खड़े हुए है । कागज पर यह मार्ग जितना आसान लगता है ,व्यावहारिक रूप से उतना ही कठिन एवं कठिनाइयों से ओत प्रोत हैं । जिस तरह दूसरे देश विकसित हुए हैं , हमारे राष्ट्र की राह उनसे कहीं दुर्गम एवं विपरीत थी1 क्योंकि जितने भी राष्ट्र आज विकसित कहलाते हैं, वे भारत की तरह की परिस्थितियों से नहीं गुजरे , परन्तु फिर भी यह तो मानना उपयुक्त है कि विकसित राष्ट्र की श्रेणी में पहुँचने के लिए राष्ट्र की समवेत् मानसिक एवं राजनैतिक शक्ति अवश्य ही श्लाध्य है जिनके प्रयासो से राष्ट्र का पल्लवन एवं विकास होता है। भारतवर्ष ने भी आजादी के उपरान्त इन सभी ऊँचाइयों को छूने का सतत् प्रयास किया है । भिन्न–भिन्न जाति , धर्म , भाषा बाले राष्ट्र के लिए शायद यह और भी कठिन एवं दुसाध्य प्रयास कहा जा सकता है । सबसे बड़े विश्व के जनतान्त्रिक राष्ट्र में विकास को प्रवाहवान् रखना अत्यन्त कठिन नही तो सरल भी नहीं हैं। भिन्न – भिन्न राजनैतिक दल उनके अपने चुनाव घोषणा पत्र , सामान्य एवं आरक्षित वर्ग , भिन्न – भिन्न धर्म ,जाति , और भाषा कहीं न कहीं समग्र विकास में कठिनाई पैदा करते ही है ।2 राष्ट्र के विकास का मूल्यांकन करने के लिए विगत सात दशको के पिछले इतिहास के पन्नों का अवलोंकन करना आवश्यक है । शिक्षा , स्वास्थ्य,कृषि सड़क , जनसंख्या नियन्त्रण , पर्यावरण , सैन्य शक्ति , औद्योगीकरण एवं मुद्रा भण्डार आदि राष्ट्र के विकास का इतिहास लिखते हैं । उत्पादन , ग्रामोत्थान , एवं आर्थिक विकास के साथ साथ प्रतिव्यक्ति आय में वृद्वि तथा रहन सहन का उत्थान राष्ट्र के विकास का आधार हो सकते है। भारतीय संविधान को लागू हुए लगभग 70 वर्ष हो चुके हैं , इन सत्तर वर्षो में आर्थिक , सामाजिक उन्नति स्वयं इस बात का प्रमाण है कि निश्चित एवं नियमित गति के साथ भारत ने विकास किया है ।

3 कृषि के क्षेत्र में स्थापित कीर्तिमान भारत की छवि को चार चांद लगा देते है।हरित क्रांति के जनक डॉ वर्गीज कुरियन को यह श्रेय जाता है ।3 उसके वाद पंजाब के पूर्व मुंख्यमत्री कैरों द्वारा वीज लाकर कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना द्वारा समस्त पंजाब और पूरे देश में वितरित हुए जिसमे अन्न उत्पादन में अभूत पूर्व क्रान्ति हुई तथा भारत देश जो दाने – दाने के लिए अमेरिका की ओर झांकता था , आत्मनिर्भर हुआ । यहां तक कि आज हमारे खाद्यान्न भण्डार अन्न से लवालव भरे पड़े है कई क्षेत्रों में निर्यात भी कर सकने में सक्षम हैं । इस पहली हरित क्रान्ति ने जहां देश को आत्म निर्भर बनाया वहीं अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का गौरव बढ़ा ।

61वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति महामहिम प्रतिमा सिहं पाटिल ने इसी आधार पर दूसरी हरित क्रान्ति का आह्वाहन किया था अपने भाषण में महंगाई दूर करने के लिए दीर्धकालिक उपायों की आवश्यकता बताई थी । हमारे देश की तरह पूरी दुनिया में अनाज की मांग वढ़ रही है , अत स्पष्ट है कि हमें पैदावर वढाने की आवश्यकता है । दूसरी हरित क्रान्ति के लिए नए बीज , उन्नत कृषि तकनीक एवं प्रभावी जल प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने योग्य है ।

इसी तरह दुग्ध क्षेत्र में आई श्वेत क्रान्ति ने भी राष्ट्र के विकास में अभूत पूर्व योगदान दिया है । 1950–51 में जहां देश में दूध का उत्पादन मात्र 1 करोड़ 70 लाख टन या , वहीं श्वेत क्रान्ति के कारण आज 70 बर्ष बाद यह उत्पादन 14 करोड़ पहुँच चुका है तथा निरन्तर इसमें वृद्वि हो रही है। हरित क्रान्ति के सूत्रधार एम एस स्वामी नाथन के प्रयासों से सिंचित एवं असिंचित कृषि क्षेत्रों में पैदा वार वढ़ी ।4

आज श्वेत क्रान्ति के कारण भारत दुनिया का सवसे अधिक दूध पैदा करने वाला देश है , पहले ऐसा नहीं था । श्वेत क्रान्ति की शुरुआत गुजरात आनंद से हुई और यह दुनिया भर में जाना पहचाना नाम वन गया 5 । 1970 में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की स्थापना हुई । डॉ वर्गीज कुरियन ने इसे व्यावसायिक रूप दिया 6। हरित क्रान्ति के बाद हुई श्वेत क्रान्ति ने गावों की

अध्यधिक गरीवी को कम किया । सहकारिता आन्दोलन से श्वेत क्रान्ति ने एक नया आयाम जोड़ा । आज भारत वड़े पैमाने पर दुग्ध उत्पाद एवं निर्यात कर रहा हैं ।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति अन्तर राष्ट्रीय मंच पर भारत को गौरव प्रदान करनी वाली है । वैसे तो परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना 1948 में हो चुकी थी , परन्तु दुनिया के नक्शे पर भारत परमाणु शक्ति के रूप में उसी समय चिन्हित हुआ जब 18 मई 1974 को पोरवरण में उसने पहला परीक्षण किया ।

11 , और 13 मई 1998 को भारत ने पोरवरण में पांच और परमाणु परीक्षण किए 7। इसी उपलक्ष्य में 11 मई तकनीकी दिवस के रूप में प्रति बर्ष मनाया जाता है । भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम पिछले 70 वर्षो में निरन्तर प्रगति पर है । 1962 में गठित भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान कमेटी जो बाद में इसरो कहलाई निरन्तर सक्रिय कार्य कर रही है आर्यभट्ट भास्कर , रोहिणी , इन्सैट–1 , आइ आर एस –1 , ैस्ट , इसैट ठ , आइ आर एस –1 सी , जी एस एल वी – डी–1 , इन्सैट –3 । आदि अनेकों उपग्रहों का सफल सम्प्रेषण परीक्षण विगत वर्षो में हो चुका है । जो निरन्तर चल रहा है । श्री हरि कोटा चन्द्रयान प्रथम का सफल प्रक्षेपण पिछले वर्षो में हुआ है जो इसका प्रमाण है कि अन्तरिक्ष अनुसंधान में भी भारत किसी राष्ट्र से पीछे नही है तथा यह प्रक्रिया निरन्तर जारी है ।

पंचायती राज की स्थापना :– राष्ट्रपिता गांधी का स्वप्न था ' ग्रांम स्वराज्य ' । छठे और सातवें दशक में राज्य सरकारों ने ' पंचायती राज' की व्यवस्था को स्वीकृति देनी शुरू की । राज्यों में कानून पारित हुए , परन्तु पंचायती राज के इतिहास में 24 अप्रैल ,1993 की तारीख मील पत्थर की तरह दर्ज हो गई , जब संविधान में 73 वां संशोधन कर के पंचायतों को सबैधानिक प्रतिष्ठा और पर्याप्त अधिकार दिए गए ।8 आज अीधकांश भारत में पंचायती राज व्यवस्था लागू है । पंचायतों , से लेकर जिला परिषद तक महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था सुचारु रूप से अमल में लाई गई है , सम्भव है शीध्र ही इससे ऊपर भी सदनों में यह आरक्षण देखने को मिलेगा ।

सूचना क्रांन्ति का उद्योग :– सूचना क्रांन्ति आधुनिक भारत की पहचान है । देश में हर साल चार लाख से भी अधिक इंजिनियर तैयार होते हैं । 1950के दशक से ही भारत पश्चिमी दुनिया को इंजीनियर निर्यात करता रहा है । नए जमाने में भारत आउट सोर्सिग का सबसे बड़ा हव वन गया है 9। अन्तर्राष्ट्रीय नक्शे में वेगंलूरु ने भारत को एक नई पहचान दी है । देश में भी सूचना संवाद क्रान्ति के लगातार कीर्तिमान वन रहे हैं । आज देश में पचास करोड़ से ज्यादा मोवाइल फोन कनेक्शन लोगों के पास हैं और करीव 3 करोड़ 32 लाख टेलीफोन लाइनें संचार का माध्यम वनी हुई हैं। आठ करोड़ से ज्यादा लोग इंटरनेट से जुड़े हैं । इस आंकडे की वदौलत भारत विश्व में तीसरे स्थान पर पहुँच गया है । दुनिया में ग्रड वैंड इस्तेमाल करने वालो की सूची में भी हम 12 वें स्थान पर हैं जो आजादी से अव तक के सफर की कम उपलब्धि नहीं है । यह तीव्र विकास सूचना क्रान्ति के रूप में जाना जाने लगा है ।

औद्यौगीकरण एवं आर्थिक सुधार :– 1950 के दशक में भारत को सुदृढ़ता देने की आवश्यकता थी । ऐसी अवस्था में सार्वजानिक उपक्रम के भिलाई , दुर्गापुर , रांउर केला , वोकारो स्थित कारखानों ने देश को मजबूती देने का वीड़ा उठाया । वक्त के साथ साथ विकास की दर भी तेज हुई , दुनिया भर के देशों के लिए भारत अच्छा वाजार वन गया । लाइसेंस प्रणाली के खात्मे और आर्थिक सुधारो ने भारतीय उद्यमियों को अपनी चाह और क्षमता के मुतविक हाथ पांव पसारने के मौके दिए । दुनिया के समस्त देशों में भारतीय मूल के उद्यम अपनी पताका लहराते रहे हैं । विख्यात पत्रिका 'फार्च्यून ' में शामिल करीव 250 कम्पनिया भारत पर आश्रित हैं । पिछले कुछ सालों में टाटा स्टील , हिंडाल्को , वीडियोकॉन , सजलान एनर्जी ने विदेश में वड़े सौदे किए है । विप्रो , इंफोसिस पहले ही विलियन डालर क्लव में शामिल हो चुकी है ।

सुदृढ़ अर्थव्यवस्था :– भारत की अर्थव्यवस्था विगत 70 वर्षो में दृढ़ से दृढ़तम हो चुकी है । जहां विश्व के कारण मन्दी की मार से गडवड़ाने से अर्श से फर्श पर लुढ़क गए वहीं भरतीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होने के कारण मन्दी की मार से डगमगाई नहीं । अव तक मन्दी की मार झेल रहा IT Sector फिर से रोजगार उपलब्ध करवाने लगा है । विप्रो , आदि कम्पनियां शुद्व लाभ अर्जित कर रही हैं तथा भारतीय अर्थव्यवस्था को मजवूती दे रही हैं । यह भारतीय अर्थव्यवस्था का ही परिणाम है कि विश्व के अनेक देशों की वड़ी कम्पनियां जहां दिवालिया हो रही थी वहीं भारतीय किसी भी कम्पनी को यह मार नहीं झेलनी पड़ी । अर्थशास्त्रियों के अनुसार 2010–20 में भारत चीन से आगे निकल जाएगा तथा भारत की विकास दर 10 प्रतिशत से अधिक होगी जवकि चीन 7–8% तक रह जाएगा । भारत की प्रति व्यक्ति आय 8 प्रतिशत की दर से वढ़ेगी । ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में विकास का लक्ष्य 9% रखा गया था एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में गरीवी का प्रतिशत तेजी से कम हो रहा है यह 26% से घटकर 21.8% रह गया है । वर्तमान में 23.8% करोड़ लोग गरीवी रेखा से नीचे रह रहे है इनमें 17 करोड़ केवल गांव में हैं 10। उड़ीसा सबसे निर्धन एवं चण्ड़ीगढ़ सबसे सम्पन्न है ।

सैन्य शक्ति का विकास :– भारत की सैन्य शक्ति का मनोरम दृश्य गणतन्त्र दिसव पर स्वयं अपनी कहानी कहता है । जो सैन्य शक्ति इस समय हमारी हैं। , 70 वर्षो पूर्व इसका अनुमान लगाना भी कठिन था । आज भारत देश की सेना में 13 लाख से भी अधिक सैनिक हैं , नौ सेना में 27 युद्व पोत शामिल किए गए हैं। वायु सेना में 950 लडाकू विभान शामिल हैं । सैन्य शक्ति में भारत महाशाक्ति वन चुका है , चीन की सैन्य शाक्ति भारत से अधिक है । आज भारत की थल सेना में अर्जुन जैसे टैकं , अग्नि एवं शोर्य मिजाइल शामिल हैं जो किसी भी शत्रु के दान्त खट्टे करने में सक्षम है । वायु सेना में तेजस रोहिणी राडार के प्रभाव को विश्व भली भान्ति जानता है । वजट में रक्षा के लिए परिव्यय पिछले 70 वर्षो में सर्बाधिक आवंटित किया गया है । ग्याहरवीं पंचवर्षीय योजना में 1,11276 करोड़ का प्रवाधान रखा गया था जो पिछली योजना से लगभग 40,000 करोड़ ज्यादा है ।

शिक्षा के क्षेत्र में भारत की स्थिति सुधरी है । दुनिया भर में भारत देश को अव सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है यह गर्व की बात है खासकर विज्ञान और टेक्नोलोजी के क्षेत्र में हमारी उपलब्धियां किसी भी देश के लिए ईर्ष्या की वजह हो सकती हैं । पिछले साठ साल के सफर पर नजर डालें तो शिक्षा के क्षेत्र में हमने काफी प्रगति की है । इस दौरान हमारी साक्षरता दर 18 प्रतिशत से वढ़कर लगभग 80: तक हो गई है , अभी भी 20: जनता निरक्षर है । आवश्यकता है इस साक्षारता दर को वढ़ाया जाए । लड़कियों की शिक्षा में भी पर्याप्त सुधार हुआ है । फिर भी यह महसूस होता है कि रोजगारो न्मुखशिक्षा हमारे विकास दर को तीव्र कर सकती है । साधारण , स्नातकोत्तर रोजगारों की फौज निराशा में जी रही है , उनकी योग्यता का सही सही सदुपयोग नहीं हो रहा जो चिन्ता का विषय है वर्तमान में साक्षारता दर सुधरी है । 2001 की जनगणना के अनुसार साक्षारता दर 64ण्80: जो अव वढ़ कर 80: प्रतिशत से अधिक है । सरकार निरन्तर रोजगार के अवसर वढ़ानेका प्रयास कर रही है ।

महिला सशक्तिकरण :– विगत 70वर्षो के इतिहास में कभी भी इतना ध्यान महिलाओं के विकास एवं उनके सशक्तिकरण की ओर नहीं दिया गया जितना विगत वर्षो में देखने को आया है । इसमें कोई दो राय नहीं कि महिलाओं की स्थिति सुधरी है । उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कई कानून वने है , दहेज , धरेलू हिंसा , और कार्य स्थल पर उत्पीड़न के खिलाफ कानून उल्लेख्य हैं । पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण उन्हें सशक्त वना रहा है इसी तरह सर्व शिक्षा अभियान महिलाओं में शिक्षा का प्रकाश फैला रहा है । अव गांव की महिला भी शिक्षा की अलख जगा रही है , परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि सब कुछ ठीक – ठाक है । कन्या भ्रूण हत्या अभी जारी है , महिलाओं के लिए कानून तो है लेकिन उनके खिलाफ हिंसा और वढ़ी है । राजनैतिक सह भागिता के लिए कानून है परन्तु सत्ता उनसे दूर है। निर्भया काण्ड अव भी अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर हमें सिर झुकाने पर मजवूर करता है।

सूचना का अधिकारः– गणतन्त्र के 70 वर्षो के इतिहास में सबसे वड़ी उपलब्धि सूचना का अधिकार कानून है । हमें भले ही 1947 में आजादी मिल गई थी लेकिन जनता को सही अर्थ में इसका मतलव तभी समझ आया जब सूचना का अधिकार नामक कानून बना । आज बिना किसी प्रयास घर वैठे निर्बल से निर्बल व्यक्ति सत्य एवं सूचना को प्राप्त कर सकता है ।

मनरेगा वर्तमान में एक अदभुत योजना है । महात्मा गांधी ग्रामीण गारंटी योजना का लागू होला बहुत वड़ा कदम है , जिससे निर्धनों को जहां रोजगार मिलेगा वहीं ग्रामों से पलायन भी रुकेगा । इसके अतिरिक्त गरीवी उन्मूलन एवं रोजगार हेतु अनेक कार्यक्रम चलाए गए है जिनमें ग्रम स्वरोजगार योजना , सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना प्रमुख है । इस वर्ष भी मनरेगा के लिए पर्याप्त वजट का प्रावधन है ।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में जनसंख्या का नियन्त्रण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । भारत की जनसंख्या अनियन्त्रित रूप से वढ़ने के कारण अर्थव्यवस्था , रोजगार , शिक्षा , चिकित्सा जैसे मौलिक सुविधाएं भी प्रभावित हुई है । फिर भी वर्तमान में जनसंख्या में स्वतः ही अंकुश होने के कारण भविष्य में आशा वंधी है । 1951 में जहां भारत की जनसंख्या 36 , 1088090 थी आज 1,25 करोड़ तक पहुँच चुकी है इसके नियन्त्रण किया जाना चाहिए ।11

इस तरह संक्षेप में कहा जाता है 33 करोड़ जनता के लिए जहां आजादी के बाद अन्न नहीं था वहीं 125 करोड़ वाले देश में पर्याप्त अन्न भंडार है तथा पर्याप्त अन्न पैदा कर रहे हैं । सड़के थोड़ी एवं छोटी थी आजादी के बाद आज 4 से 6 लेन वाली सड़कें यातायात सरल वना रही हैं , भारत निर्मित कारें विदेशों को निर्यात हो रही है । पलाई ओवर , वाईपास आवश्यकता अनुसार आज वनें हैं। , समुद्र में पहला विशाल वाद्रा वर्ली पुल विकास का स्तम्भ बनकर उभरा है । दूर संचार ने तेजी से विकास किया है , विश्व में सबसे कम कॉल दर भारत में है I.I.T की संख्या बढ़ी है , अनेक तकनीकी शिक्षित नौजबान विदेशों में भारत का नाम ऊँचा कर रहे हैं । साफटवेयर के क्षेत्र में भारत अग्रणी वना है ।12

आजादी के बाद आज तीव्र गति से चलाने वाली गाड़ियों में वृद्वि हुई है , Metro Rail एक अजूवा भारत को गौरवान्वित करने वाला है अनेक परमाणु परीक्षण , चन्द्रयान –1 का प्रक्षेपण , सात से अधिक देशी और विदेशी उपग्रह विगत 70 वर्षो की प्रगति का उदाहरण हैं । चिकित्सा , अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी वंछित लक्ष्य प्राप्त किए है । सूचना का अधिकार आजादी के बाद निर्धन के हाथ का व्रहमास्त्र सावित हुआ है । विश्व अर्थव्यवस्था आर्थिक मन्दी में हिल गई परन्तु भारत की अर्थव्यवस्था नहीं ड़गमगाई । परन्तु इतनी उपलब्धियां होने के वावजूद सब कुछ ठीक है ऐसा नहीं कहा जा सकता । उग्रवाद , आतंकवाद , सीमाओं पर धुसपैठ , देश में भ्रष्टाचार , हमारी प्रगति एवं विकास को शून्य बना रहा है । यह भी सच है कि प्रगति का एहसास केवल कुछ लोगों तक ही सीमित है । अर्जुन सेन गुप्त समिति की रिपोर्ट के अनुसार 70 प्रतिशत जनता प्रतिदिन केवल 20 रू पर जीवन यापन कर रही है जो हमारे लिए अत्यन्त शोचनीय है । देश में करोडपंतियों और गरीवी के नीचे रहने वाले लोगों की खाई और बड़ी हो रही है ऐसी अवस्था में आजादी और गणतन्त्र का कोई अर्थ नहीं रहता इस अमीर और गरीव की दूरी को समाप्त करने का प्रयास अवश्य होना चाहिए तभी एक भारत एक सर्वांगीण विकसित देश वन पायेगा !

संदर्भ सूची

1. भारत के विकास की समस्याएं और समाधान श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल
2. उपरोक्त
3. हरित क्रांति के जनक डॉ एम एस स्वामीनाथन

4 श्वेत क्रांति के प्रणेता डॉ वर्गीज कुरियन प्रकाशक विर्चुअस पव्लिकेशेन

5 श्वेत क्रांति के प्रणेता डॉ वर्गीज कुरियन प्रकाशक विर्चुअस पव्लिकेशेनज

6 श्वेत क्रांति के प्रणेता डॉ वर्गीज कुरियन प्रकाशक विर्चुअस पव्लिकेशेनज

7भारत का परमाणु परीक्षण और उसकी परमाणू नीति व्योम शंकर

8 श्रीवास्तवपंचायती राज व्यवस्था सिद्धांत एवं व्यवहांर डॉ नीतू रानी

9सूचना प्रौद्यौगिकी का लहराता परचम श्री सत्यवान शर्मा निवन्ध

10भारत में समन्वित ग्रामीण विकास एवं नियोजन शिवशंकर सिंह

11स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास श्रीमती शशि प्रभा

12सूचना प्रौद्यौगिकी का लहराता परचम श्री सत्यवान शर्मा निवन्ध